

214015

50903

50904

50905

50 903 - (विश्वेश्वरी स्तोत्र प्रदीपिका)

50 904 - (पञ्च स्तोत्र) -

(लघु स्तोत्र टीका संग्रह)

50 905 - (आनन्द बहिनी)

A-100 N: →

विश्वेश्वरी मंत्रा प्रदीपिका श्रीः

→ 50003

पुष्पाणि

श्रीः
०

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ॐ कुरु भक्तविलसितकण्ठलक्षणभर्तृपतिरवतारमयं भक्तद
रविभूषणं परिलभतु भक्तभक्तिकर्मा ॥ लीलाल
लितुल्लसन्ममिमिभाषी भवतु कृष्णभूषणं श्रीगणेशाय नमः
श्रीभक्तविलसितकण्ठलक्षणभर्तृपतिरवतारमयं भक्तद
कलितुल्लसन्ममिमिभाषी भवतु कृष्णभूषणं श्रीगणेशाय नमः
पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि पुष्पाणि
भक्तविलसितकण्ठलक्षणभर्तृपतिरवतारमयं भक्तद

उरम उरम ररे पिभन मे रिपिल निगभ मिक्क सविहः मभम
 डुरयं मकर ॥ अउ ए ररी भिव मभुवरै डुं कल वली भिव
 ठिभउ दल मरम दं ममिर मर ॥ मडु म ॥ उः कड ॥ य
 वभउर मठिर वयती भिव ॥ मर ॥ म ॥ मयम मली
 गमि मकल मर ॥ ठर ॥ मडिउ मर तुल मकिदि ॥ उ
 लंका कलिउ मा ॥ पिपुल मल उव मिउ मक विरु वमठ म
 मर मल मडु दल पुकर दर विरु धिउ पीरिउ मर पयै उर
 रवम प्रक उ मभ भापी मडिउ मर क गिल मडु पेल यगल ५

म
 उ
 म

माप

उतिविश्रितमरुमभौकरज'फलं॥ मपुस्रुक्कलवउंभितमिरे
 देमं'भुग्मदभौलिभ'लि'क'विग'एभ'र'कुवरेमभीभकिवउ
 भकल'गभ'म'दम'रुव'डि'प'षी'ण'म'द'विग'मि'उ'भ'द'भु'इ'पु'य
 ष'प'म'डि'म'द'ग'ल'॥ वै'णि'नी'भ'क'ल'वि'भ'ल'प'रु'मी'पि'कं'णी'कं'वि'ग
 म'य'भ'ी'ति॥॥॥ उं'ऐ'म'ह'क'ल'य'व'उं'भित'मि'रे'वि'भु'प'ग'न'य
 इ'कं'उ'रु'प'ए'र'नि'भ'र'मि'व'र'दे'म'म'इ'भ'क'उ'व॥ य'इ'दे'डि'प'र
 कि'ण'र'ग'व'डी'र'भ'दि'उ'भ'प'र'प'प'उ'ती'भ'र'भ'पु'भ'वि'द'र'डि'भु'र
 म'भ'व'ौ'प'गी॥॥॥ दे'ए'र'नि'उ'व'उ'पुं'भ'र'मि'भ'द'ग'द'ए'य'भि॥ किं'कुं

प३३
 श्री.
 ७

३
 +

पसुतीभत्रपस्रा मएभ'व'क॥ विदरति भ्रैरंभ्रैकुय'म'पु'भ्र'न
 विममीरु'उ'म'तिभ'व'प्र'भि'भ्र'वौपगीव'विदरति' भ्रैः प'हो
 उ॥ प'भ्र'ह'कलय' व'उं'भि'उ'मि'र'उ'ति॥ म'भ्र'व'न'क'वि'र'लि
 ए'उ'उ'उ'वि'भ्र'गि॥ वि'भ्र'गः ५५ छि'भ'य'य'भ्र'च'भ्री'ति'उ'दि'भ्र'
 रि'भ'य'गी'ए'भि'ति'वि'भ्र'पू'जः॥ उ'भ्र'इ'र'भ्र'इ'कं॥ न'भ्र'म'भ्र'इ'र'भ्र'
 इ'र'भ्र'भ्र'गै'ठि'णी'य'उ'उ'भ्र'भ'दि'उ'भि'इ'जः॥ म'भ्र'भ्र'भ्र'भ्र'भि'ति
 य'व'उ'॥ म'भ्र'वौ'प'दः भ'ति'म'यं'भ'दि'भ'भ्र'भ्र'मी'ल'य'र'॥ न'प'भ्र'
 व'उ'भ'द॥॥ सु'मि'ह'उ'वि'ल'भ'ल'ल'भ'उ'य'उ'भ'उ'गी'य'उ'य'

श्री.
 ३

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

विष्ट

श्री

लल्लवड॥ उच्चागल विमेषभुय सुमिह उविल मलल मउय
विश्वभापिल मरिह उवउउउउउः॥ किं कुतः यङ्गीय ॥
वेदमिभयी वेदमयेय विष्ट भुः भुपुंय भु भु उव
देण रविउं उगीयं वौपगी वमं भयि विषये म भु मय लष्टु
भमं विणेदि उचमय किं कुतं वमं भण कल्ले लकैल दल
दकल्ल रल्लरीय कविउ भ भु ए मिद्रि पूर ॥ भण यः पीयुं ध
भुय कल्ले ल भदल दद सुधं यः कैल दलः कल्ल वउ भुय
श्री कपिल रं उ भु यम कल्ल रं उ भु यगी य उ उ य कविउ उ भु

[illegible]

श्रीः

यामिकलया निधुः पुत॥ पनः किं कुत सुतः वद॥ निमप॥ भा
देभउ भुकरा॥ पुभीम प्रभा मंजुन॥ भम हं भगलं भागुतं मेदि॥
भम्वर सुल सुभा ल॥ भवे सु सु विरु पयेक॥ वसि ति॥ एते च ले भ
दिउ मि ति य वग॥ स प व भगल मि ति प्र एरं के वलं व ग रे भ व
सं कर कु॥ मि टु क॥ देल लि उ॥ एत न्म दि भ वं व ग व कु पं भ न्म दि
प्र भा म य ति प्र क र॥ स प रं दे वि स्र स्र मि॥ य भु र ग व भु भे मं भ दि
भ न्म भ न्म न त भ ए भि उ म व उ सु द्र प्र ह उ यः उ मी ग य ति॥ केः ग ल
कै रं भ छैः॥॥॥ स प र ग व ह री ए उ ग ए ग म दि क ल भ द॥॥ भ उ र

मु

श्रीः
५

दहउभयतिभयीरमेदेगापभयीभइप्रभयीरुउमर
भयीविउप्रतिप्रभयी॥ उरइउवनेसुंगीविणयिरीएयभि
एयविठेभुऊनएविलमिप्रएभउयःपेलउभभऊयः॥
अदेउतिभभुउ॥ देभउ॥ भइमेवविणवहभलहअवउम
उरकगलनइविठेभुउएयऊडविरीउवनेसुंगीएयभि॥
किंऊउंइविणयिरीविणवनमीलं॥ अउएवभभभभऊयः॥
ऊभयःपेलउ॥ नवगहपहमहःकरलहभमीहउ॥ किंऊ
उ॥ भऊयःइऊनएविकमिप्रएभउयः॥ इऊनएउऊन

ਲ

ਧਾਵਿਕ ਮਿਰੀ ਪ੍ਰਕ ਸਸੀਲ ਤਮਾਧੀ ॥ ਪਵਿਤ੍ਰ ਮਤਿ ਦਮਾਤ
 ਮੁਖ ਕਿੰਕੁਤ ਕੁਧਤਿ ਮਧੀ ਧਤਿਰੀ ਕਰ ਮੁਖਧੀ ॥ ਪਰ: ਕਿੰਕੁਤ ਕੁ
 ਰਾਧੇ ਕਰੋਧ ਮਧੀ ॥ ਰਾਧ ਸਰੋਧ ॥ ਭੁਭੁਰੇ ਵਿਧੀਧਤ ॥ ਤਥੁ ਕਰੋਧ ਮ
 ਮੁਕਲ ਤਮਧੀ ॥ ਪਰ: ਕਿੰਕੁਤ ਪ੍ਰਾਣ ਮਧੀ ਪ੍ਰਾਣ ਦਮੁਰੇ ਤਮਧੀ ॥ ਪਰ:
 ਕਿੰਕੁਤ ਮੁਤ ਸਰ ਮਧੀ ਮੁਤ ਸਰੋਧ ਮੁਖਧੀ ॥ ਪਰ: ਕਿੰਕੁਤ ਵਿਧੁ
 ਤਿਧੁ ਮਧੀ ਵਿਧੁ ਰਾਧ ਮੁਖ ਪ੍ਰਤਿਧੁ ਮੁਰੇ ਪ੍ਰਤਿਧੁ ਮਧੀ ॥ ਤੇਰੇ ਕੋ
 ਤਿਠਰ ਤਿਧੁ ॥ ਰਿਦ ਧਤਿ ਮਧੀ ਤਿਧੁ ਮਧੀ ਵਿਸੇਖਲੇ ਪ੍ਰਤਿਧੁ ਮਧੀ
 ਧਤਿਧੁ ਰਾਧ ॥ ॥ ਸੁਖੇ ਰਾਧੀਧੀਧੁ ਰਾਧ ॥ ਰਾਧ ਸੁਖੇ ਰਾਧ

ਦਕੁਰੁ

ਸ੍ਰੀ

क० भ० प्र० भा० ए० व० कु० म० भ० मे० वे० कु० व० रे० सु० गी० भ० त्र० मि० न० व० ग० य० म०
 व० उ० भा० ॥ इ० मे० सा० र० म० के० भ० मी० प० रि० म० ये० म० छ० इ० ण० भ० गा० र० श्रै० रे० ह० ग०
 वी० मि० वि० रु० भा० लि० उ० मी० ट० उ० मि० ट० गिरः ॥ दे० ए० र० नि० ॥ अ० न० मि० न० भ० त्र०
 ल० ह्री० क० उ० ॥ उ० व० प० ग० व० उ० भ० व० कु० व० रे० सु० गी० भ० मे० वे० ॥ अ० प० र० दे० मे० वि० ॥ उ०
 ल० ॥ अ० मे० म० भ० मि० ट० गिरि० व० ट० ॥ मी० ट० उ० की० क० उ० ॥ किं० क० उ० गिरः म०
 र० ॥ के० भ० मी० प० रि० म० ये० म० छ० इ० ण० भ० गा० र० श्रै० रे० ह० ग० वी० मि० वि० रु० भा० लि०
 क० ॥ म० मि० ठ० व० म० र० मी० म० भ० के० भ० मी० ह० इ० ॥ प० व० क० पि० उ० प० भ० क०
 मि० डि० प० व० क० वे० प्र० व० प० म० ह० ल० ॥ उ० भ० यः प० रि० म० ये० म० छ० न० इ० ले०

५३५

रुद्रनायः भूतभगवः पीषधनागिणिः॥३॥ भूभैरवं चक्रय॥ यउ
 हृगगमसकयभरवीमयैलददभुभंयैविह भिगिनामः॥३॥
 एयतीतिउषा॥ किं कुतं इभ सुकुमलत्रकरभपगुं॥ इकिं लरभभे
 तसुमगं॥ पिउतिलयभेउ वडा प्रवं इकिं लभलिहउउः
 धहुं विणयउभुत्रपज्ञादिरभपुप्रदगभभउउय॥ पु
 कभलभिउिमहु तिउंरुवति॥३॥ उउेवगुवंगीणं मरुकलत्रभ
 रभदिउंउमयेदिलिपिमिडियउेइरविणिः॥॥ ७॥ मरीनभ
 सुदएभभद॥॥॥॥॥॥ लेपप्रभउंवेइवभुभरिमीप्रभुक

निपुत्रपइभभुम
 रदभपगभा +
 ५१:१८
 भुएरे
 श्री

मिह

शुभिमयः उभयलदगीभृगल्लतुययभृकुतकंडुदलं॥भा॥
 निप्रयकैउकंउरुपुंलिपुंमुमिययुतुंभनभुरमंडमापमुव
 वृद्ध~उवेमिउः॥भरुमेगुल्लरभभ्रभभ्रभनंप्रकटनरेणुभु
 यभृभृउवउभा॥१॥७मनीकगवडएरविणरभाद॥॥॥
 द्वाभाण।मउरुल'वृणगउंरग्रीणगडेयएपडवडिठिल्ल
 ठिःऊभभिउंभयलउंभनउंभा॥प्रभ्रअलपविइपइकल्ल
 प्रहेलपेलअणकल्ले'कल्लमरुमंरुभमभकुरैकल्लैकल्लभा॥
 देएगनिदंरग्रीणगडेयएपेइरभापेभयलउंउंश्रीकगव

न
 १
 श्री.

ह्रीं यणो प्रणयाभि॥ किं कुतं मयलं॥ सुणमउडल भूण
गउं॥ सुणमरुमेदनउडल भूण मउडल कभलं उडगउं म
भुंउं॥ परः किं कुतं भूतं॥ उडलं मत्रं॥ अथं किं कुतं॥ सु
मिठिरकगमिठिचलैः ऊभमिउं पधिउं॥ यषाड पिलउं
नऊभगी पधिउं ठरगी डऊभा॥ किं कुतैगमिठिचलैः पूडव
डिठि॥ एकमेकं प्रोडि॥ सुममउ डुरेचडिचउं येधं उं पूड
नऊय मुमुषा॥ अथवा सुमिठिरकगमिठिः ककपदउं॥
पूडव डिठिं मपुडिले ममिठिचलैः ऊभमिउं परमेठविउं मि

मैंदंरुकरु कएह मर~॥ पछ सुम सगउ॥ पूरु हउरौ
वभाभिर मरगइ मभालिइउ॥ श्रीमवए विहुपली रुउकल
निहुम मर मउ भुहुम भुटिक दिभादिउ पयः मेठ वतीठ
रती॥॥ देभाउः मैंदउ वभवक॥ वरुकरु कएह मर~ भुवम
ययउ पइवीरु मर~ भवभाभिति पूभि॥ किंदइ भन॥
हिउं पूरु हउरिवहु॥ कभयए सुम सगउः॥ पूरु गीरं पछ
रागपिवयु रं पछ सुम सगउ॥ पछ भन मइ मरग॥ य
इयराउ मर~ उइ मरग॥ भितिउ यउ सुषव पछ

३३.

दत्तकल निष्कृत भगभउभुक्तु दृष्टिक दिज्ञ ॥ श्री भवेष्ट ६
 गुणि यदृष्टिक ईउहुं भाद्रितं वदली नउं ॥ यद्ययेन यं ॥ पउ
 धाभेक ईकर लया रुमी ठवति ॥ उरुमी ठव विदुते यष्ट भउ
 धा ॥ प्रववा श्री भवेष्ट भदेष्ट यष्ट विदुध ॥ दत्तकल यष्ट
 कल यष्ट ॥ निष्कृत भगभउभुक्तु दृष्टिक ईः ॥ निमल दृष्टि
 कल यष्ट भगभउभुक्तु यद्ययेनी रंतु दृष्टिक यष्ट भउ यष्टि ॥ यज्ञे यम
 कः ॥ यउ यष्ट किः ॥ पीयधं वदति उरु चरेन म दृष्टिक दि
 दृष्टि ॥ उरु यष्ट की दृष्टि यष्ट दृष्टि उरु यष्टि पिदि उरुः ॥ ७

दृष्टिक दिज्ञ

श्री.

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

वि

इक निह गिरि श्रव निरुतं मद्रु कयेः श्रमै कं भये विह गउ टा
म॥ उ भु गि निरि वि गिरि भुभिं श्रव इक निह गिरि वेव श्रि॥ श्रि
पु र म रे गु मि उं॥ परः किं कुतं भा य भयं भदः भद्र कय विम डिउं
भद्र कय वं गु मि उं भा॥ य व तें ही श्रं तें ही श्रं॥॥॥ उ टा पि क प द उं
श्र य भा॥ श्र प रं किं कुतं॥ श्र णी र भ उ मि नू र नू र भा॥ श्र उ णी रः श्र
भु र उ ये भ उ मि नू भु ण भ ग र भु र उ नू र॥ भ र दे र भ नि भ उ क ल म
मि उ जः॥ परः किं कुतं॥ वि प री उ गी डि र म रे श्र ग म क र व रि॥ वि प री
उ गी उ र म र य भद्र कय उ श्र व र॥ इ क र व रि र य॥ चें ही कं पिं ही दं

ॐ
श्री.
१३

श्री.
०१

परिमारे भक्त यमण भयौ इण नीए उत्र भत्र न क न पी प्रधक
लं लिरी भा ॥ व भ उल प उ निर कु म निर डै उ भ म भ म प्र ड म
बुल केः भु र उ प्र ल के र ड नि ड ड नि मे ॥ ५ ॥ दे भ उ भु नी ए उ उ ए प
उ ॥ भ भ भ ड नि म गी र व य वः उ ड नि उ ड भि नि ड र उ उ ल म उ ॥
केः प्र ल के र भ द द लेः किं न ड उ ड र ड के व ड भ भ नी ए ड म
प्र डि प्र भ र प्र डि ण भ व य ॥ रिः प्र क र भ व व ड भ भ र वि ण य ॥ प्र
प्र के प्र भ र प्र ॥ सु ण र सु ण र म र ड म ये भ र मे ॥ मि ण परि भ र व ड र
डै ड ति ॥ किं ड डे ॥ निर कु म निर डै उ भ म भ म प्र ड म बुल केः ॥

वि० कुंमंभदरादिउंरिएभुभुयमइउभउभदरंउइयकु
लुभः लु० एलंउभुप्रलकैरिवप्रलकैः॥ किंकुउंइंभेणभयोभि
णभउपा॥ प्रः किंकुउं॥ मत्रनक न प्रपीयप्रकलैलितं॥ मत्रन
प्रउउं॥ यकुन प्रपीयप्रदयभउंउभुकलैललददयभुवि
उउंभउउउं॥ भा॥ ॥ ०७॥ मषेदरीवीराइयएइभुदलम
द॥ ॥ वा॥ ॥ वीराभिमंएपाभिपरभंउकुभगएभिमंभउभउ
पंरंविभनभदिउं॥ करउंउंउं॥ मीयइलितभोलिकीलित
भलि॥ प्रउउं॥ एरैजीरैः पीउंभभिरउंभभेणभभुउंभकु

दे० ॥ ३ ॥ मकले सुविउरकरल्लममममवहुउवक ॥ विरउगं
 मउउमझु ॥ ५ ॥ मरउं ॥ कषयेरकरल्लनेमंवालीगीणमेकरउ
 पभाणरमंरुमदंएपाभि ॥ ३ ॥ उउपिकमगणंलीकरउपंदमय
 एपाभि ॥ ३ ॥ उउमरुपरंमपवउउउउः ॥ परउउपुयभउउउपं
 परः किंउउविमनमदिउकरउउं विमनेमदिउउउउउ
 उउयभउउविमनमदिउकरउउं ॥ भोविउिमजिगीणंइद्रगूणं
 पाभि ॥ मषवभाउपरमिइइगीणविमेपंपररुयमल्लदि
 परमममपप ॥ मउमवेरइइकरल्लइउमकरमममिइइ

श्री.
 ०१

उ सुदिदकराकर ॥ अषमभमम ॥ मकर सुताइकराकर ॥ अरेरे ॥
य सुगीए सुत इत परं विमजम दिउ करे उरं मता ॥ इतिउ
पं मजिनीए व ॥ किं विमिष व क ॥ नीरे चो उर भा वणेरा सुदि
ता अत्र कुता म ॥ किं कुते वीरे ॥ मी अरे लिउ भालि की लिउ म लि
पु अत्र नीरा ए रे ॥ मी अरे य व ठ व तिउ व अरे लिउ भालि व की लि
ता सुरे पिता ये म ॥ य सुरे व पु र व नीरा ए रा ये सु सुषा ॥ किं कुते
वी ए इयं परं म परा उ ह व मे क य सुत इर म मि ति ॥ अष व प रा ॥
याः परा निरा य व अ म मे क य सु ति व नीरी ए वि मे म म

...

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ਸ੍ਰੀ.
੦੧

ਵੇ ਗਿਗਰ ਭੀ ਬਰੀ ਭਾ ॥ ੦੭ ॥ ਅਦ ਨਿਤੰ ਨਿਰਤੁਰੰਤੰ ਗਿਗਰ ਭੀ ਬਰੀ ਵਾਸਾ ਮ
ਪਿਯੋਰੰਤੰ ਵਾਗੀ ਬਰੀ ਸੰਸਾਰੇ ਮਭਾਗਯਾ ਮਿ ॥ ਕਿੰਕੁਤੰ ਗਿਗਰ ਭੀ ਬਰੀ
ਦਸੁਰ ਪ੍ਰਸੁਕ ਧਾਨ ਪ੍ਰਸਿਰੀ ॥ ਦਸੁਰ ਵਾਸ ਪਾਲਿਨਾ ਪ੍ਰਸੁਕ ਧਾਨ
ਪ੍ਰਸਿਰੀ ॥ ਅਦੇਯਾ ਮੁਤਾਤਾਤ ॥ ਕਿੰਕੁਤੰ ਦਸੁਰ ਪਿਯੋਰੰਤੰ ॥ ਨਸਿਰ
ਤਸੁਰ ਵਾਸ ਧਾਨ ਨਿਰਸਿਰੰਤੰ ਧਾਨ ਤਿਤਾਤਾਤ ਸੁਰਗੋਪਤੰ ॥ ਕਿੰਕੁਤੰ
ਅਸਿਰੰਤੰ ਅਸਿਰੰਤੰ ਮੰਦੁ ਮਾਮੰਤੰ ॥ ਕਿੰਕੁਤੰ ਮਾਮੰਤੰ ਮਿਤੰ ਨਸਿਰੰਤੰ
ਵਸਤੰਤੰ ਵਿਸ੍ਰੰਤੰ ਸ੍ਰੀ ੭੭ ਮਿ ॥ ਮਿਤੰ ਨਸਿਰੰਤੰ ॥ ਇਕੰਤੰ ਦਸੁਰ
ਮੁਤਾਤਾਤ ਵਿਸ੍ਰੰਤੰ ॥ ੭੭ ॥ ਤਸੁਰ ਵਾਸ ਤਿਤੰਤੰ ਪਤਿ ਮੁਤਾਤਾਤ ॥

मैठुं उय भुगुं गंठ विष्णु ॥ भौं दूदक वर मील ॥ परः किं कुं भुं
हुं ए भु भाल भु ए पी हू ती भणि क मेठ युं भ ॥ ७० ॥ प्रवेद यी
पर भ सुद ए र भु वि मि धं ड ल भा द ॥ १॥ उ मे वि प्र प षी र पी र वि
ल भ त्रि भू मी भ भ र भु उ भू उ वी मि वि मि इ रु द्वि भु ग ग वि हू ए उं
क र मी ॥ या भ क हू वि प्र ल भ र भ र भ ॥ प्र हू लि उं इ लि ठि मी
ल द्वि उ य र प्र लै भ भ र भे नि ये य रि कः क ल भा ॥ ७१ ॥ दे भ उ भु
मे वं वि ण उ हू ए र भे भ भ र ग ती वि हू ए उं मे ठ उं ॥ किं कुं उं
मी ॥ वि प्र प षी र पी र वि ल भ त्रि भू मी भ भ र भु उ भू उ वी मि वि मि इ

ठाङ्गि भठगा॥ विष्णु पखंडा प्रेतीति विष्णु पखीरं यद्गुचष्टापकं पीरं
 मं विलभङ्गी यङ्ग॥ विष्णु मंभी मयदिउं यद्गुचष्टा उमं मयभ
 उं भूतः प्रवदमुष्टवीपीरं यद्गुचष्टा यः मिरुभुष्टुठगभो
 दगा॥ यं कयगीभकलुभभरमेदेव विष्णुं मेरा॥ उं मं म्भुष्टुकलं
 विष्णुयः॥ कै उयराष्टलैः किं कुते उयराष्टलै मीलदि॥ मयपंकैः
 रुद्र भोलिठि म्भुकैः किं कुते म्भुकैः प्रेष्टुलिउं म्भुपलि॥ उं रव
 प्रसिउं रिडुङ्गः॥ १॥ म्भुष्टु मंभी कगारुष्टवीरा इयमुष्टुष्टुगगुं
 एपविण १ भठगा॥ सुमेवगठवमिष्टुविष्टु मयपं राउं मकभम

श्री.
 १

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

श्री ७७

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

उकेलयेकेकिल॥पंकेकिलभुपंयेकककगवउंगभुगपि
 मपुपुयाम्पामुति॥उयामिपिउवेविउयःपुमभुम
 उमभादर॥मपिउरकुपेकवतिकिंकुंगिरं॥भदकविमउ
 म्दीउंफोमउंकिंकुउंमदकविमउःसुल्लविदउः॥भदप्र
 उंउंमुदमिमुमभि॥यइगुमदंविनेउउउगुमरव॥यइलप्य
 वेपिलेउउउइलप्यवेति यासुल्लउयाविदिउःपेरिउंमुः॥
 उममीकगवउमभुउनकिउंएरउरभाद॥वागीएंकुवरे
 गीवमवेडुम्वदववामिनिश्चादवलविमीलपाउकरंगपुय

भिनिहं गिरभा॥ वी॥ प्रभुक भदप्रइवल यंशु एभुमभुमयं॥
 विह॥ प्रभम॥ सुनिः करतलेग विहवहिह भाभा॥ ०७॥ प्र
 दं निहं गिरं वगी प्रगीष्ट याभि॥ किं नृद उइस्र दउति॥ किं वी॥ वगी
 एभे करं कुवरे प्रगीभा या वी एं द्वाी करं॥ वमवमवमवा विनिश्चाद
 ति॥ किं कुतं गिरं वल विमील पउक करभा॥ वले रि ति मइ द
 गे विमीलेः प्रगी नृतः पउक करय याभा उषउभा॥ परः किं कुतं
 गिरं करतले स्रउतिः पालि उले वी॥ प्रभुक भदप्रइवल यम
 भुनंदम॥ विह॥ यद्वि॥ ७ः कररु मे प्रइमउतं॥ प्रपे म वि॥

ॐ करे ॐ वी ॐ ॥ वभाण करे ॐ पभुकं मदि ॐ वकरे ॐ वभुं
 यभिवकरे ॐ भुं नदं मण ॥ किं कुत भभुं नदं टा ए भुभल भद्र
 इल भिडग ॥ किं विमिषे कर उले र न ॐ सुनिः रजक विडि ॥
 प्रः किं कुत गिर भा विडव विरुभा ॥ सुविडव यु क पी क्व विरुभ
 विला भ यभु भा उ वा उ ॥ ०७ ॥ प्रक मउ य भइ य वा ॥ रिं द्रो व म
 वम वपवा मि निश्चा द ॥ ॥ ॥ उमं नी क ग व ड भ ड ए प ए र उः डल
 भा द ॥ ॥ ॥ उम उः न प य उ र म य उ ग वि ड पि प डं भ यि ए डु भे र
 क म र की डिक विड भ डै क भिं द भ र भा ॥ कल ड मि मि व व भ र

श्री.

१०

कुवरप्रगठगजकिभ निप्रल्लभः परिपाकपीवरपगनप्रतिपु
 भद्रभा॥॥॥ देभउमुउभद्रल्लपष्टरतः भयिविधयेविष्टापिपंड
 विष्टाभपिपडिंडुगद्रयउगभद्रजंप्रप्यएय कयद्रपयभ्र
 कभय किंकुतं विष्टापिपंड एद्रभैरुमैरकीडिकविठमहेक
 भिंदभसं॥ एद्रमद्रिकउभं यद्रैरुं भैरुदरुंडउभुयैगपदति
 श्रीकीडिदभुपवंविणय कविठपउवतीमद्रिकभैरुदमम
 मीय कविठउयामेद्रमेकं भिंदभसं यद्रउउष॥॥॥॥ किंकुतं वि
 ष्टापिपंडकल कसिमिावभउवरः प्रगठगजकिभ निप्रल्लभः

श्री.
३३

दिणवेष्टितभा॥ पले रें मयरे उ मउ मपिले पीप्रधगोपा दारं भूतं
 भूभमभूतं एपति यै एि द्वा छले निषलः॥ ७०॥ उष्ट इक नः क
 एका कलिक मशूतिभ इमपि चाते माति भपैति मीय ए इत एग
 दिक रागुः॥ उभम सु एगं इया कुत रभा डै उ प्रतीति प्रमैः भूपे
 हुं परमभूतं इव मर भू ए गिरां विहमैः॥ ये भ उः प्र म उ यी ए
 मक र भुपं उदिर इते स्र इ म मेलो पातिः वत मि व प्रः उ प्रै म प रि भू
 गत भु पा याः सु क र भू द इ म फल व इ ग ले भ रै द ग ये वि द ग र भ
 रै य भू उ उ षा॥ उ उ पौ रि उ भा या दिणवेष्टितभा॥ प रि उ भ म उ क व र

यः

ਮਾਂ ਸਾਂਝੀ ਲੋਰ ਲੋਮ ਪੁਤਿਲੋ ਮਤੋ ਦਿ ਤਿਭਾ ਤਿਪੁਕਰੇ ~ ਵੇਖਿਤ ਮਾਂ॥ ਤਤੁ
 ਰੇਤ ਮਪਿਲੇ ਮਮ ਗੁਪਲੇ ਕੋਰ ਮਰੇ ਮਪੁਲੁ ਸਮੁ ਮਏ ਪੀਧੁ ਧਗੇ ਗਫਰ
 ਮਮ ਤਪੁਲੁ ਵਲੁ ਮਪਰੰ ਮੁਤੁ: ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਤੁ॥ ਮੁਤੁ ਪੁਕਾ ਦੁਮੁ ਮੁਮ
 ਮੁਮੇ ਵਿਲਮ ਮੁਰ ਮਮੁ ਤੁਤੁ ਪੁਰਿ ਜਲ: ਸਿਮਿਤੁ: ਮਮ॥ ਲਿਫੁ ਮਲੇ
 ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਤਿਏ ਧਤਿ ਤੁਪੁ ਮਮ ਮਮ ਪਿਨਿ ਸਿਤੁ ਮਮ ਮਮ ਮਮ
 ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਤਿਏ ਮਮ ਮਮ ਪੈਤਿ॥ ਕਮ ਮਮ ਮਮ ਕਮ ਕਮ ਕਮ ਕਮ
 ਤਿਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ
 ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ
 ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ ਮਮ

ਸ੍ਰੀ.
 ੭੩

५३८॥

इहै वल्ले कपेल इयं ॥ मउ श्वेव भण भुवे ध्रुव गलं भवु वगालि
 भास्ति कभ्रल भमय विद्रुग पिम गी ववि भन भ्ररः ॥ ३७ ॥ क मि
 इहि ॥ उडु ए लु मि उरु वन भुव भे डु ए ध्रु मि उ दि र व रु मे
 मर ॥ उ डि इयं डे प डे ॥ वं मः प ध्रु रु व व र ठि रु म ये वा मि इयं
 ग उ व डु ए भ्रु भ म भी र ॥ सु म परः कः रू प ड ड भि के ॥ ३८
 इ स भि के उ उ व भु डुः सु क रः भो लिः मि रः ॥ स व प रः सु क र
 भापे म ॥ परः उ रं रे रे रे इ इ यं ॥ उ डु क ल्ले ॥ ए ए म भा वं म प्र ए ॥ ३९
 डि र भा वं म प्र ए इ यं ॥ उ म र ए ॥ उ म र ए ॥ इ क र ग ड क र क र

श्री
 ३४

लङ्कयं॥ उच्चमर्षेयुः उच्चमर्षेयुः उच्चमर्षेयुः॥ भक्तु
क्षगालि पकरमीरितले उच्च॥ उच्चमर्षेयुः उच्चमर्षेयुः॥
अलं॥ अर्षेयुः विभजभक्तुः॥ अः करभुवशीव॥ कदि कपनप
एउउच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥
उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥
मुउच्चमर्षेयुः॥ पदपकरदकर॥ उच्चमर्षेयुः॥ उच्चमर्षेयुः॥
वाभक्तुः दकरः॥ अर्षेयुः अर्षेयुः अर्षेयुः अर्षेयुः॥
॥ नातिदमयेगपुउच्चमर्षेयुः॥ नातिदमयेगपुउच्चमर्षेयुः॥

कः॥ एतुर्वेयः मभु उं डियगलवसधमभु उं डेवंकुप' भुव
 मभुणतुर्वेकवति॥ इगमभुं मभेदेभिभहसुसु लि एतुर्व॥
 सुपः लिङ्गः ददयंभापंरुमभुं मिगड डियाडु मभु
 म॥ प्रः मभुदेकः मभीरः पू मभु॥ दे एरविहः
 कः भुवकेपेदुद्रुभिडि॥ ७५॥ सुषकगवडवल्मभयम
 नीरुठ एरुठलभद॥ एवंवल्मभयं वप्रभुवमिवेलेक
 इयष्टापकं येदं वनयठ एडवयवेधारेपिडे रदारे॥ अडी
 रुयमिदवभ'रकभल'करैः मिगञ्जा विकिभं विडु मभ

श्री.
 ७५

उकरउले मृषिप्रभामिदृक् ॥॥॥ देमिवेपवमभरप्रकर
 यः प्रभामुववल्मभयंवप्रह्लकइयह पकंरएह मयउ
 केहुउंवप्रः लेकइयह पकं ॥ कय मवयवे प्रभुरेपिउरह
 ॥॥ म्दंरवरया म्दंमेववल्मभयउतिभइ ॥॥ उप्रमवविह
 मइमविहः प्रतीकुयप्रतिउपाहुइ करउले म्मभयमउ
 केहुगविह ॥॥ मृषिप्रभामिदृक् ॥॥ मयमभमप्रमृष्ट
 मृष्टीइइक् ॥ किंहुतेः करउलेः मिरज्ञयिठिः ॥ मिरभ
 विष्टः ॥॥ प्रः किंहुतेः मिरवभमकभलकरे ॥॥ मिरवभम

भायंमभयेकमलकगउवाकउयेयेधंउैअउलीनउैरिहउः
 ॥७५॥अषकगवहृष्टरुलभद॥॥येएरतिरापतिभउउ
 भदिष्टयतिगायातिवाउेधभाभुभपाभुतेभदपमउभेचि
 लभानिगभा॥किष्टकीइतिहुहुवःअरठितःश्रीमन्मृचि
 रीकाडिक्कडिक्कगडिकैगवभकभैकगुमेककरी॥७६॥दिए
 रतिवेषमधपवविपंतउउववलूमयंवप्रहरतिअषकगप
 तिभउउभदिष्टयतिवाअषकगयाति॥उेधंप्रमधभा
 भुभापंगिगंविलामेचमंविलभनेमपाभुते॥किंकुतेनि

श्री.
 ७७

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ॐ श्रीपद्मभयविर्मणपतिपत्नये उधं ररे म्रमम ॥ मेवते मरल्ले
 किरीटवलकीविम्राभुगइकुगहृष्टुभेदरभेदिरीउलरल्ले भिभ्र
 द्रगगामियः ॥ १ ॥ देएरनिप्रनिमं उववल्ल भयं वप्रमयानी
 एविमकिं न यानी एरगुष्टि उंभग ॥ २ ॥ प्ररस्र श्रीकु म्रमनेमि
 उंम्रीकु म्रमने उंम्रीगितुमिहृः ॥ ३ ॥ ये एरः श्रीपद्मभयविर्मम
 ते एपति ॥ ४ ॥ पत्ननिप्रयरे उधं प्रमध ॥ ५ ॥ मम विहृं ररे म्रः मएर
 म्रमने मेवते ॥ ६ ॥ किं कुउररे म्रः ॥ ७ ॥ किरीटवलकीविम्राभुगइकुग
 हृष्टुभेदरभेदिनीउलरल्ले भिभ्र द्रगगामियः ॥ ८ ॥ किरीटमं

श्री.
 २१

एवं बलहृदि विदुषे रङ्गा नृत्यः॥ उ इ दि म् उ वि नि वि भु वि
या नि रङ्ग नि उ पा भङ्ग र ह्ये द्रु कि र क उ भु य भ म् र भि युं य म्
५ भं यं भं भि नी उ ल ग णः॥ भ दी उ ल ग र म् भु र भि म् भु र ग र ग म् श्री
दे धं उ उ पा मी प भ य उ ति म् भु र्के ध र लि ए भ भि र्के भ र्के
भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के
उ पा व ल र लि ए म य इ के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के
भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के
भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के
भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के भु र्के

उमीपाभ्रयविमउष्टे॥उषामेकुं॥इंद्रध्वगं॥विलिपिष्वपचं
 कंमीमुषावल्भभ्रदकुपाग॥भ्रगपिपष्टद्वारमभियंइउंमीपमे
 मंभर्येनमति॥३१॥उमंरीकगवटःपरचल्भयमगीरभ्रप्रकर
 उभ्रुपभ्रउरेल्ललभाद॥॥श्रीगीणंभकलद्वारमिषप्रःकैण
 द्वागतेकवयवयैठएउभ्रउउत्रभिभंउष्टगुंउएगुडी॥लक्ष्मीभित्त
 मंभगवल्भदगीलेकवप्रध्वन्यमे॥वन्नमल्ललवियमिउरापै
 तिरेवक्तमिउ॥३२॥देशभ्रभकलद्वारमिषभकलद्वारभकल
 गंवल्लभ्रभादिषप्रभं॥श्रीगीणंश्रीमिडिडुपं॥परस्रर

कृष्ण उमरी गी एं रुवेडा ॥ एवमभमना प्रकृते ॥ यः प्रभं मुत्तव ७ भं उ
 तं ॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ७ उति ह्यपदं श्री गी एं गुप्ति उं भा इक
 भयं मगी रं रु एते ॥ उभृ गृत्तल ह्नीः पद्म लया ए गृती वि वि मती
 कृष्णि मृत् प्रमे मे रै वा पे ति रै वा धया ति ॥ किं कृत्तल ह्नीः ॥ उ उ उ ॥
 भिन्न गृत्तल दगी व डि र भ ल ले क रू ॥ पद्म रू य मे ॥ र रू र म
 ह्नी ल रि य गी उ र भिन्न गृत्तल ग ए मृत् ॥ य मृत् रं भ मः ॥ उभृ य ग रू
 ल दगी प रि भ ल प रि मृत् ॥ उ इ यै ले क रू गृत्तल मि डि य व र्ग ॥
 उ उ उ ॥ कृत्तल वि ले ल या पद्म रू य मे ॥ रू भ र प डि ॥ भ प व

39

॥ इव लयं ॥ भायं ह्रीं कण्डोपा मल्लमहिके ॥ मयगाउ मकिणय
त्रि ॥ उभेउष्टुप्रमपष्टुजेउभुभ्रकलुगु ॥ लह ॥ मंपत्रः भियः
भ्रकुति मंदं प्रभवति ॥ किं कुतः भियः ॥ विद्रिउ ममरेच क मली
क उगदयभूएः ॥ ममर ॥ उचुचु क मली क उगं क मली ॥ मम
भूएच विद्रिउ ममरेच क मली क उगदयभूएयाकिउः ॥ परः
किं कुतः भियः ॥ विद्रिउ ममरुमवधुमदगदराः ॥ विः ममरुमे
विः ममलनेरयेवधुमुधुमएवमदमुगदराह कलः ॥ य
॥ विः ममरुमभुवतः वापुष्ट भ्रुलिमदेउठदिः मउप

श्री.
३.

इतः ॥ ३ ॥ सुषुप्राहृत उरे ~ वउयगलेरदलाउरभाद ॥
 यभुंष्टायतिगगभ'गरउरझिऊररैकउरभुंष्टायपद्मग
 नलिनी ॥ धमराष्टाभिंसी ॥ गलमिहमपइरइरमिउप्रहंइकु
 ध'र'मे ~ मंवालिउद्गगवभराभुभ्रभ्रगुद्गः ॥ ३० ॥
 कध्रंअभमकरंकभलिनीपइंकलकैमलंकुणकैकिल ॥
 काभिनीकुलकुद्गकलैलकैलदलभा ॥ महुउध्रलयारले
 भ्रभ्रभ्रभ्रभ्रवेगाउरः कभ्रभ्रनिपंउतिदुवरगिभ्रभ्रभ्रति
 मेमतिम ॥ ३१ ॥ देवभ्रयः प्रभं ~ भ्रगगभ'गरउरमिउतिमगभ

श्री.
 ३०

गगमे० भभभुउरतीयाभिद्रुगीरैकउभुः प्रउगेभपेभेव
अभुयउहगगंविक्मिउंयउद्रगगरलिनीपधभभुमंक
भलिनीकुभभंउमेवभभभपुभउ॥ उतिभाउषउभेवविण
इणयति॥ उभुपुनधभुद्रः भभदभुभुभुभु॥ उभुम
हउतेविभुविभकेवलंकयुभेवविभुति॥ किउकुभभकंक
भभभु०॥ उभुकभलिनीपइपरः किंकलकेमलंकल
गगपुभकेवलभिमभेव॥ किंम॥ ऊएइकिलकाभिनीकु
लजजकलैलकेलादल॥ ऊएभहकुमभयभभंयकुकि

लक भिनी जलं कलक ली वरं ॥ उभय ॥ कद्र कल्ले लकैल
 दल ॥ कद्र मवे सार लैर परः परः भाडुं ॥ अद्रा पौः किं
 वडि लय रल भद्र भद्र पभद्र वेगाडगः कभद्र ॥ प्रलय
 कल्ले रैर लै वे सार भद्र पद भद्र भुभुये भद्र पभद्र भद्र मे
 देगः ॥ उर उर ची डिउः भद्रः कभद्र वे प वं क वडि ॥ दउ डि प
 मरि पउ डि म रि सवे वे व भद्र गं या डि ॥ पर निरं वं पर भ्रा
 निरं मरि य डि म ॥ पर ल व भं ड भद्रः मे म य डि मरि मि लि उ
 उ डि क म प ॥ अउ पि ये पभद्र वे गाड रै क व डि भ क भद्र ॥ १

श्री.
 ७७

ਪਤਤਿਗਿਰੰ ੨ ਮਘਤਿ ॥ ਪਰਬਲਵ ਮੇਠੈ ਚੁਭ ਮੈਧਤਿ ॥ ਕਿਮਿ
ਮੇਰੈ ਮਧਾ ਕੁਤਿ ਮਿਤਿਯੇਨ ਮਮਾ ਧਮਪ ਮਧਰ ਮਧੁ ਮੈਠੈ ਧਿਨੁ
ਨਭਤਿ ॥ ਕਿੰ ਚੁਤਾ: ਸੁਧਰਾ ॥ ਗਲਾ ਮਿਠੁ ਮਪਤੁਰਤੁ ਮਿਤੁ ਮਪਤੁ
ਕੁਖਾ ਮਿਸੇ ॥ ਮੇਰਲਿਤਾ ਧਰਾ ਗਰਮਰਾ: ॥ ਨਿਰਮਲ ॥ ਨਿਰਮਲ
ਕੁਰਿਕਰੇਤਲਾ ਮਿਠੁ ਪੁਸ਼ਮ ਮਧਯੰ ਕੁਚਾ ॥ ਰਵਿੰ ਮਪਤੁਧਤਿ ॥
ਧਿਖਤੀਤਿ ॥ ਗਲਾ ਮਿਠੁ ਮਪਤੁਰਿ ਪਤਾ ਮੁਸਾਨਿਧਾ ਨਿਰਤੁ ਨਿਤੈ
ਮਿਤੁ ॥ ਧਿਮਿਤੁ: ॥ ਧਾ: ਪੁਤੁਰੁ ਕੁਖਾ ਮਧਕੁ ਲਾਧੁ ਮੈਠੁ ਮੁਮਾ ਮਿਸੇ
ਏ: ॥ ਕਹਿ ਪਦੁਧ ਮੁਠਿ ਮੇਰਲਿਤਾ ਨਿਮਿਸੁ ਨਿ ॥ ਸੁਧਰਾ ਗੰਧਮ

१॥ रिम या भंउ भुष ॥ यद्वा प्रथम उद्देष्टु विमेष ॥ भा ॥ ३३
 ७॥ मंरी गगय ह भइ ल्लय भउ रागण भद ॥ ॥ श्री भइ ल्लय
 भणैय कगव सै उट म म्द्रि के हंी क प्रथम उभा मिमल य
 कुं दं ॥ म छी विनि ॥ एी व प्र ॥ विणु भुभा ॥ दमय गृक्ति भि
 उं मे कु म्द्रं मे वे नि ए रै ए ल क र क म्द्र द्वा दु ए भी सगी भा ॥ ॥
 द भइ ल्लय रा भणैय कगव सै उट म म्द्रि के म इ ल्लय ७ ॥
 रा भणैय य म्द्रा ॥ रं म्द्र सी य कगव उ म्द्रु म्द्रु सै उट मे व म्द्रि क प्र
 क म्द्र क द्वा ॥ उद्देष्टु पदे दम म्द्र एी विनि दं मे निज ॥ ॥ द्वा एी

श्री.
 ३३

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ਤੇਯੋਂ ਦਰੁਯਗੁਤਿ ਮੁਖਿ ਮਿਤਿ ਮਾ ਮਿਤਿ ਤੁ ਮ ॥ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ਪਦਮ
 ਸ੍ਰੀ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ਤਿਨ ਮਹੇਯਾ ਕੁਮਾਰ ਕੁਮਾਰਿ ਕੇਤਤਿ ਤਤਿ ਮਹਲਾ
 ਤਿਕੰਦੀ ਕੀ ॥ ਪਦਮ ਮਹਲਾ ਕੀ ਕੀਤੀ ਯਤਿ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ॥ ਤੇਯੋਂ
 ਰੰਗ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ਪਦਮ ਤਤਿ ਤਤਿ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ॥ ਤੇਯੋਂ ਸ੍ਰੀ ਮਹਲਾ ਪਦਮ
 ਤਿਸੇਤਤਿ ਮਹਲਾ ਪਦਮ ਮਹਲਾ ਵਿਨਿਸ਼ਾਦ ॥ ੭੭ ॥ ਭਯੰਗੀ ਪਦਮ ਮਹਲਾ
 ਪਦਮ ਪਦਮ ਪਦਮ ਮਹਲਾ ॥ ਪਦਮ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ
 ਮਾ ਕੁਮਾਰ ਕੀਤੀ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ
 ਵਲੀ ਨਗਿਤਿ ਕੀਤੀ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ ਮਹਲਾ

ਸ੍ਰੀ.
 ੭੭

डिउँ भुँ भुँ पेः ॥॥ देभ' उभु प्र न धा भ' हः द' उ' उ' भुँ भुँ सिंग भि
र' भ' प' म' म' ह' ॥ र' ग' भ' द' म' ज' र' ग' भ' ग' र' उँ भुँ र' क' ल' र' भ' र' द' य' ग'
ए' य' र' य' रि' निः ॥ भ' पे' डि' र' व' रि' य' व' र' व' डि ॥ उ' व' र' र' र' डि' रि' ल' भ' डि
किं कु' उ' भ' भ' हः क' व' ली' द' उ' डि' कु' व' र' र' ग' भ' क' व' ली' र' र' भ' र' र'
य' डि' कु' व' र' ॥ उ' भ' भ' भ' भ' उ' क' व' र' र' ग' य' भ' भ' उ' व' र' उ' भ' उ' क' उ' प' र' ॥ य' व' न'
॥ ॥ प' व' वि' र' प' प्र' व' ज' ल' र' र' भ' भ' उ' भ' र' र' भ' र' र' र' र' भ' र' र' र' र' र' र' र' र' र' r'
ग' य' ए' उ' ॥ किं कु' उ' र' र' क' रि' म' क' भ' क' भ' उ' ॥ भ' उ' उ' र' भ' भ' र' व' प्र' भ'
र' क' य' ॥ लि' भ' य' रि' म' क' भ' क' भ' उ' र' र' र' र' र' र' र' र' र' र' r'

ॐ श्री. ३५

कैलशकुण्डलभूषणभयापनिमयेः॥सगुरुपुण्यवर्णनंभवेभूषण
उभूःयेभयापनिमयःकिं॥भयदःउकिंमुजःकलदैत
सातुविमलैकमडग॥दैतभयनंतमेवसातुंगामरुतकभ॥
उद्विगलतत्रिगकलैकमडगएकपूरी॥परकिंकुं
कलापरंवांसंतत्रतीपगनिणंवांसंविभुगयती॥३१॥उमंरीपम
विष्टाप्रतपगभजइरद॥॥इंभातापितगैदमेवभदमडुंइ
मभुंभापइरिष्टइभमगकीडिममिउंइकगुमडकुउभा॥किंकुय
भकलभादिउमिडिइइकपकेभलेजीविष्टाप्रिमंप्रभादमर

ॐ भां ऊ परं रा भिभो ॥ ॥ ॥ देभतः कपाकं भले देवि सुसु रिमं प्रभीरु
 मभृक् भानं जम ॥ यतं मे भमभृक्तः परभृत् किं भपि मरं रा भि किं
 कृत् ७ उतिष्ठ कृत् ७ उति किं दे एर विमभं भं भात पि उर एर री एर कं
 पवसं ॥ ॥ परभृत् कृत् ७ मे भि कृत् ७ इमे व कृत् ७ उर कृत् ७ उर कृत् ७ उर
 वभाप भदमर कृत् ७ मे व विष्ट स्रुत् ७ म विष्ट कृत् ७ मे व ॥ ॥ उर उर मी रि उ
 की डि म रि उ प्र कृत् ७ की डि प्र व उरं कृत् ७ मे व ॥ ॥ स्रुत् ७ उं प्र स्रुत् ७ उं कृत् ७ उं कृत् ७
 व कृत् ७ यः ॥ ॥ परभि किं भृत् ७ मे कृत् ७ ल भभी दि उं मे कृत् ७ ल व डि उं मे कृत् ७
 ति ॥ ७ ॥ ७ म री परभ मि कृत् ७ कृत् ७ उरं कृत् ७ मे कृत् ७ ॥ ॥ श्री मि कृत् ७ कृत् ७

श्री.
 ३

डिकैपियंगेडगीयेभ्रुडडडुवकन॥वरु॥लयोभिग॥श्रीमभ्रु
प्रिष्टिठिणयभभयिप्रभत्रंमेउस्रकगभकल'गभमरुवडी॥३१॥
कन॥वरु॥लयेकन॥यउवेवरु॥लयेशभविमधेरद्रुप
उटनिकटवडिनिश्रीभिद्रु'षडडिकैपियंगेमउजेरुलियंगे
डडडुवप्रकटैडग॥मभिद्रिद्रु'षेप्रठिणयश्रीमभ्रुगिति॥म
भयिविधयेमेडभरः५मत्रंमकगभभ्रेदंनउव'ग॥५३ःकिंहुतः
श्रीमभ्रुभ्रकल'गभमरुवडीभकलस्र'भा'व'गभःभ'प'व'म'रु'उ
भिमे'ल'गभमरुवडुउडाउ॥किंहुतेभिद्रु'षेभिद्रु'षेकन॥

श्री.
अ।

ਮੇ: ਤਥਾ ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ
ਲੁਧਾਪਰਿ: ਤਤ੍ਰਯਮਿਸ਼ੁ ਵਿਚੁ ਰੇਖਾ ਮਧਯੇ: ॥ ੩੮ ਸ੍ਰੀਸੰਘੇ

गिरभदभमगिरः व० श्रीप्रभगाभिन्नाः रुक्म० ॥ परभुः प्रभवेः
 भदविभवेदेमेपरिमितेपिपरिमयंशुप्रसृष्टमप्रुपिपिड
 पिउभदमिनिवभावनैरु० ॥ ६० ॥ श्रीमभुताषकन०
 कगभिन्नाषश्रीभिन्नाषकन० ॥ ६१ ॥ श्रीमभुताषकन०
 भलिनेपिभयिप्रभवंमेतः ऊरुप्रम० ॥ ६२ ॥ श्रीमभुताषकन०
 मभुताषकन० ॥ ६३ ॥ श्रीमभुताषकन० ॥ ६४ ॥ श्रीमभुताषकन०
 मभुताषकन० ॥ ६५ ॥ श्रीमभुताषकन० ॥ ६६ ॥ श्रीमभुताषकन०

श्री.
 ३३

यिविधयेयउच्चिउंभमत्रंभमयंऊन॥यउऊ॥अऊभाउकि
 छिमपिमर~राशि॥२०॥उमंरीपरभेसुरम्यालइभ'द॥
 उऊप्रडिऊ~भमभूविलेमरभुपषीणभुपयउःभूटभाविग
 भीउ मडुवरंठगवगीहमयंप्रविष्माम्भुभुयंरवरवेसभपिव
 जील॥२१॥उऊभरेरप्रकर~गुनभर~दिगप्रडिऊ~ह
 ~ह~प्रडिउमभूविलेमरभुपषीणभुपयउःभूटभाविग
 भभगउंरेभूटंप्रकटंयषाठवडि॥उषाठगवगीउवरइगीउ
 वेगभीकणीवकुव॥किंकुउउवरइगीवरंमडुहमयंप्रविष्

५१: किं कुतुबरे शरीरगवती ॥ ५२: अयं अयमवतवरेन
 उपपद्यते मयैः मां भूः नृप भूपि वती ल्हा विभुतां प्राप्ता ॥ ५३ ॥
 मं गी भू इ विषयं गुन प्रभा द भ द ॥ ॥ वाग क्रि द्वि मे व भ उ ल भ व
 ले उ ए वः श्री म भु र भु भ द ती भि द उं प्र ति ध्रु मा ॥ अ भि न द
 रि कु व र ग भ व कु वि कु भि द भ रै क न गि र भ मि रं य क र ॥
 उ द भिं ले के र वः श्री म भु र भु भु इ भु वा क्रि द्वि मे उ लं व द
 भ व म ले उ अ भि न द मे अ भि न द न गि रं य व ठ व ति उं व
 ०१ भ इ उं दि भ क ल मि द्वि वि ग यिं गी भ द ती प्र ति ध्रु क र ॥

श्री.
 ७७

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सि॥ पत्रांणि कृयाञ्च विमुञ्चि विमोहं नैव मृत्तुं पश्यन्ती प्रभिन्ना
 उभं भगवन्ममं नैव एवामि॥ उषा वृद्धवत्तुं पलमं प्रथमैः कृम
 मैः पश्यन्ती कृत्वा॥ उषा कृमं भवन्ममं लेपनं वृद्धलं विजं भवन्ममं
 ॥ पश्यन्ती मउपश्यन्ती विवन्ममं विवन्ममं सुदुर्गातीति॥ उषानेप
 न विवन्ममं विवन्ममं कृत्वा विमुञ्चि नैवामि॥ २॥ ३॥ ममं नैवामि
 उषा वृद्धवत्तुं पलमं प्रथमैः कृम
 पश्यन्ती ममं नैवामि॥ उषा वृद्धवत्तुं पलमं प्रथमैः कृम
 पश्यन्ती ममं नैवामि॥ उषा वृद्धवत्तुं पलमं प्रथमैः कृम

श्री.
 २.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यः प्रभुं चतुर्भुजं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं
 प्रकृतं लवणं भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥
 भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥ भगवत्पुत्रं भविकुलं प्रकृतं ॥

इति वारं वारं ॥

श्री.
१०

विपल

॥ श्रीः ॥

Handwritten notes in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.

उपव मित्रुभदिभभुइभिहः ॥ इय ॥ ॥ ॥ पद्मनरक
विनाविभलठठ ॥ श्रीभइछीगणनठच डिभइ डिमीपिनी ॥ ॥
ॐ डि श्रीपुष्टी ॥ गगद विरमिउ श्रीविस्वसुगै भुइ
मीभिकभभापु ॥ ॥ नुतिः श्रीपद्मनरकवः ॥ ॥ ॥

